Fq – गन्नेसरत में यीशु का स्वागत मत्ती १४:३४-३६ और मरकुस
६:५३-५६ | 1

– Save This Page as a PDF–

गन्नेसरत में यीशु का स्वागत

मत्ती १४:३४-३६ और मरकुस ६:५३-५६

खोदाई: गन्नेसरत कैसी जगह थी? मेशियाक अपने प्रेरितों के साथ वहाँ क्यों जाना चाहता होगा? जब वे उतरे तो कैसा दृश्य था? क्यों? येशुआ के वस्त्र के लटकन के बारे में क्या महत्वपूर्ण था?

चिंतन: यदि आप जानते हैं कि कोई ऐसा व्यक्ति है जो आपकी घातक बीमारी, या विकृत मित्रों या प्रियजनों को ठीक कर सकता है, तो आप क्या हताशापूर्ण कदम उठाएंगे? आपने अपने जीवन में कब परमेश्वर का उपयोग किया है? किस कारण से आप रुके? या फिर आप अब भी ऐसा करते हैं? कैसे? क्यों?

पानी पर चलकर गलील सागर को पार करने की घटनापूर्ण घटना के बाद, शिष्यों और उनके गलील रब्बी वापस यहूदी क्षेत्र में उतरे। गलील सागर, जो वास्तव में एक झील थी, को कभी-कभी तिबरियास कहा जाता था। जब वे पार हो गए, तो वे गन्नेसरत में उतरे और वहां लंगर डाला (मत्ती १४:३४; मरकुस ६:५३)। यह झील के उत्तर-पश्चिमी किनारे के साथ-साथ मिगडाल शहर से लेकर लगभग कैपेरनम और आधुनिक तिबरियास के उत्तर तक फैला होगा। यह १९८५ में ईसा मसीह के काल की एक मछली पकड़ने वाली नाव की खोज का स्थल भी है, जो अब किबुत्ज़ नोफ़-गिनोसार में प्रदर्शित है।

गन्नेसरत कैपेरनम के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक छोटा लेकिन बहुत सुंदर मैदान था। जोसेफस के अनुसार यह एक हरा-भरा और अत्यंत उपजाऊ क्षेत्र था जो विभिन्न प्रकार की फसलें पैदा करता था। खेतों और अंगूर के बागों की सिंचाई कम से कम चार बड़े झरनों से की जाती थी, जिससे किसान साल में तीन फसलें पैदा कर पाते थे। चूँकि मिट्टी इतनी समृद्ध थी कि यह क्षेत्र पूरी तरह से खेती के लिए समर्पित था और इसमें कोई शहर या गाँव नहीं था। परिणामस्वरूप, यह एक शांत और शांतिपूर्ण क्षेत्र था जो भीड़ से दूर रहने और आराम करने के लिए एक अच्छी जगह प्रदान करता था। संभवतः यीशु का इरादा वहाँ अपने प्रेरितों के साथ अकेले में कुछ समय बिताने का था।

Fq – गन्नेसरत में यीशु का स्वागत मत्ती १४:३४-३६ और मरकुस
६:५३-५६ | 2

परन्तु जैसे ही वे नाव से उतरे, वहां के लोगों ने
मसीह को पहचान लिया (मरकुस ६:५४)। मान्यता प्राप्त क्रिया एपिगिनोस्को है, जिसका अर्थ अनुभव से जानना है। लोगों ने प्रभु को पहचान लिया क्योंकि उन्होंने उसे पहले देखा था। उनकी चमत्कारी उपचार शक्तियों का समाचार उनके सामने आया और उन्होंने पूरे क्षेत्र में संदेश भेजा और जो भी बीमार था उसे ले आये। वे उस पूरे क्षेत्र में दौड़े और अपने सभी बीमारों को खाटों पर लादकर जहाँ कहीं उन्होंने सुना कि वह है, वहाँ ले गए (मत्ती १४:३५; मरकुस ६:५५)। और वह जहां भी गया – गांवों, कस्बों या ग्रामीण इलाकों में – उन्होंने बीमारों को बाजारों में रख दिया (मरकुस ६:५६ए)। कितनी निराशाजनक तस्वीर है। लोग अपने सभी बीमारों को चटाई पर लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान तक भागते रहे। जहाँ भी यीशु के होने की सूचना मिली, या जहाँ भी उसे ढूंढना संभव हो, वे उसके पास दौड़े। यह खंड अन्य क्षेत्रों में वापस जाने से पहले गलील में मसीहा के मंत्रालय के सारांश के रूप में कार्य करता है। यह मरकुस १:३२-३४ और मरकुस ३:७-१२ के सारांश से मिलता-जुलता है, सिवाय इसके कि दुष्टात्माओं को बाहर निकालने का कोई उल्लेख नहीं किया गया है। इसमें हम मरहम लगाने वाले येशुआ की व्यापक प्रसिद्धि देखते हैं।

फिर भी, प्रभु ने व्यक्तिगत जरूरतों का जवाब दिया। उन्होंने उनसे विनती की कि बीमार लोग केवल उनके वस्त्र पर लटकन (हिब्रू: त्ज़िट्ज़िट) को छू सकते हैं (मती ९:२० देखें), और जिन्होंने इसे छुआ वे पूरी तरह से ठीक हो गए (मती १४:३६; मरकुस ६:५६बी सीजेबी)। यदि किसी के पास आज उपचार का उपहार है जिसे यीशु यहां प्रदर्शित करते हैं, तो वह व्यक्ति अस्पतालों में जा सकता है और उन्हें ठीक कर सकता है, कैंसर वार्ड में जा सकता है और सभी पूरी तरह से ठीक हो जाएंगे। मेशियाक ने एक शब्द या स्पर्श से चंगा किया, उसने जन्म से ही जैविक बीमारियों को ठीक किया और उसने मृतकों को जीवित किया। जो कोई भी आज उपचार का उपहार पाने का दावा करता है उसे भी ऐसा करने में सक्षम होना चाहिए।

यह तथ्य कि उसने अपने वस्त्र के किनारों पर लटकन पहनी थी, हमें बताता है कि हमारा उद्धारकर्ता टोरा की आज्ञाओं का पालन करने वाला एक चौकस यहूदी था (गिनती १५:३७-४१)। आधुनिक यहूदी धर्म में, कई पारंपरिक यहूदी अरबा कनफोट पहनना जारी रखते हैं,

Fq – गन्नेसरत में यीशु का स्वागत मत्ती १४:३४-३६ और मरकुस
६:५३-५६ | 3

चार कोनों वाला अंडरगारमेंट जिसमें लटकन होती है। इसे टालिट कटान (छोटी प्रार्थना शॉल) कहा जाता है, जबकि अधिक लोकप्रिय संस्करण टालिट (प्रार्थना शॉल) है जो कई यहूदी पुरुषों द्वारा सुबह आराधनालय सेवाओं में पहना जाता है। जिस तरह से लटकनों को दोहरी गांठों से बांधा गया है, उसका गिनतीत्मक मान ६१३ है, जो टोरा में आज्ञाओं की गिनती है।

वह बहुत सारे लोगों से घिरा हुआ था। वे उसकी शक्तियों से मंत्रमुग्ध थे। मुझे यकीन है कि किसी समय अच्छा चरवाहा ने भीड़ को एक तरह की उदासी से देखा था, क्योंकि उनमें से शायद ही कोई व्यक्ति था जो उससे कुछ पाने के लिए नहीं आया था। वे लेने आए थे। वे अपनी अथक माँगों के साथ आये थे। वे आए – स्पष्ट रूप से कहें तो – उसका उपयोग करने के लिए। क्या फर्क पड़ता अगर लोगों में कुछ ऐसे भी होते जो देने आते, लेने नहीं। एक तरह से यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि हमें यीशु से चीजें पाने के लिए उसके पास आना चाहिए, क्योंकि ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो वह अकेले ही दे सकता है; लेकिन सब कुछ लेना और कुछ न देना हमेशा एक शर्मनाक बात है, और फिर भी यह मानव हृदय की बहुत विशेषता है।

यदि हम स्वयं की जाँच करें तो हम सभी, कुछ हद तक, यहोवा का उपयोग करने के दोषी हैं। यदि हम अधिक बार उसके पास अपना प्रेम, अपनी सेवा, अपनी भक्ति, अपनी आराधना अर्पित करने के लिए आते हैं, और कम बार उससे उस सहायता की माँग करने आते हैं जिसकी हमें आवश्यकता होती है, तो इससे मसीह को खुशी होगी।